

उत्तराखण्ड राज्य में महिला चिकित्सा सुविधा : तुलनात्मक अध्ययन (जनपद पौड़ी एवं हरिद्वार)

सारांश

एक कहावत है कि स्वस्थ ही पूजी है किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए व जीवन में आगे बढ़ने के लिए शारीरिक व मानसिक दोनों तरह से मजबूत व स्वस्थ होना आवश्यक है और यह कथन महिलाओं पर भी पूरी तरह से लागू होता है क्योंकि महिलाएं ही देश के भावी नागरिकों को जन्म देती हैं। अतः महिलाओं का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना आवश्यक है। क्योंकि एक स्वस्थ महिला ही स्वस्थ सन्तान को जन्म दे सकती है जो देश का भविष्य की दशा व दिशा को बनाता है। महिलाएं अधिक स्वस्थ तभी हो पायेगी जब उन्हें समय पर उचित उपचार व जानकारी मिलेगी। महिलाएं अपने दैनिक जीवन का ज्यादा समय घर के कार्यों को पूरा करने में व्यतीत करती हैं और सुबह से लेकर देर रात तक घर में काम करती हैं। बड़ी संख्या में कई महिलाएं आर्थिक क्षेत्र में भी सक्रिय हैं वह घर और कार्यस्थल दोनों की क्षेत्र में कठिन शारीरिक श्रम करती हैं। महिलाएं घर-गृहस्थी का पूरा काम-काज निपटाने के साथ-साथ राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में खेतों, खलिहानों, कल-कारखानों, दफ्तरों, अस्पतालों में उपयोगी योगदान करती आई हैं। अतः महिलाओं को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वच्छ व निर्मल वातावरण देना आवश्यक है। जिससे महिलाएं अपनी स्वास्थ्य संबंधी चिन्ताओं से मुक्त होकर अपने परिवार व समाज के लिए कार्य कर सकेंगी साथ ही एक अच्छा व सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगी।

भारती थापा

शोधछात्रा,
राजनीति विज्ञान विभाग,
हे.न.ब.गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

मुख्य शब्द : महिलाएं, स्वास्थ्य, सुविधा, चिकित्सा आदि।

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड में महिलाओं को पर्वतीय अर्थव्यवस्था की धुरी कहा जाता है विषम भौगोलिक परिस्थितियों में जीवन निर्वाह के कारण पर्वतीय क्षेत्र के निवासियों का जीवन अपेक्षाकृत अधिक संघर्षशील रहता है। यहां पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में परिश्रम एवं संघर्ष करने की शक्ति अधिक है। रोजगार के ससाधनों के अभाव में पुरुष जहां पलायन करने को विवश हैं, वही परिवार, खेती-बाड़ी और समाज की जिम्मेदारियां महिलाओं का निभानी पड़ती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में निवास करने वाले अधिकांश पुरुषों के पलायन के कारण महिलाओं पर कार्यभार बढ़ गया है।¹ अधिक ऊँचाई में स्थित क्षेत्रों में स्वच्छ पानी लाने के लिए महिलाओं को दूर तक जाना पड़ता है जिससे वह अपने परिवार के लिए भोजन का प्रबन्ध कर सकें। प्रतिदिन के कठिन कार्यों को महिलाएं तभी पूरा कर पायेगी जब वह शारीरिक रूप से स्वस्थ होगी। पहाड़ की माटी से बने उसके शरीर में इतनी सक्षमता होती है कि भाग्य पर रुदन करने की बजाय वह पूरी सामर्थ्य के साथ न सिर्फ घर-परिवार की जिम्मेदारियां निभाती है, बल्कि समाज सेवा, शिक्षा, उद्यम, पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में भी सहभागी बनकर सामाजिक शून्यता को पूर्णता प्रदान करने के प्रयत्न में जुटी नजर आती है पर्वतीय क्षेत्रों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की अधिकता भी साबित करती है कि कष्ट साध्य जीवन के बावजूद महिलाएं यहां के समाज को जीवन्त बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रही हैं।² उत्तराखण्ड राज्य की महिलाएं सामाजिक मुद्दों व समस्याओं के प्रति अधिक सक्रिय रही हैं। महिलाओं द्वारा समय-समय पर अनेक प्रकार के सामाजिक व पर्यावरण संबंधि आन्दोलन किये जाते रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोधपत्र में उत्तराखण्ड राज्य के दो जनपदों पौड़ी और हरिद्वार जनपद का चयन किया गया है राज्य के कुल 13 जनपद हैं। जिन्हें दो मण्डलों

सी.एस.सूद

पर्यावेक्षक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
हे.न.ब. गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

में विभाजित किया गया है; गढ़वाल मण्डल व कुमाऊ मण्डल। जिसमें 7 जिले गढ़वाल मण्डल व 6 जिले कुमाऊ के अर्न्तगत आते हैं। शोध पत्र में चयन किये गये दोनो जिले गढ़वाल मण्डल में सम्मिलित हैं।³ दोनो ही जनपदों की भौगोलिक परिस्थिति विपरित हैं इस तथ्य को ध्यान में रखकर शोध के लिए एक पर्वतीय व एक मैदानी जनपद का चुनाव किया गया है। पौड़ी जनपद मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्र में आता है तो हरिद्वार जनपद मैदानी व समतल क्षेत्र में आता है जिससे दोनो विपरित क्षेत्रों में निवास करने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य में उनके निवास क्षेत्र के भौगोलिक परिस्थिति का अध्ययन किया जा सके। पौड़ी नगर वर्ष 1840 से गढ़वाल का जिला मुख्यालय और वर्ष 1969-70 गढ़वाल मण्डल का मुख्यालय बनाया गया है। इस जनपद की स्थालाकृति पूर्णरूप से पर्वतीय है यह 30°-8'-59" अक्षांश उत्तर और 78°-49'-8" देशान्तर पूर्व में स्थित है।⁴ जनपद हरिद्वार का मुख्यालय हरिद्वार में स्थित है, जनपद हरिद्वार गंगा नदी के तट पर शिवालिक पर्वत श्रृंखला की तलहटी में 22° 30' उत्तरी अक्षांश तथा 78° 10' पूर्वी देशान्तर में बसा हुआ है। जनपद हरिद्वार देहरादून, मुजफ्फरनगर बिजनौर व पौड़ी जनपद से की सीमाओं से घिरा हुआ है।⁵ हरिद्वार हिन्दुओं के लिए एक पवित्र स्थल है। गंगा नदी इस जनपद के उत्तरी-पूर्वी भाग से प्रवेश कर पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है 28 दिसम्बर, 1988 ई0 को इसे उत्तर प्रदेश का एक जनपद बनाया गया। 15 अप्रैल, 1997 को इसे मेरठ मण्डल से पृथक कर सहारनपुर मण्डल में मिला दिया गया। उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण के बाद हरिद्वार जनपद को उत्तराखण्ड राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।⁶

साहित्यावलोकन

डा0 शशिरानी अगवाल की पुस्तक, "स्त्री: वर्तमान सन्दर्भ में (2005)" महिलाओं का शारीरिक रूप से स्वास्थ्य होना आवश्यक व महत्वपूर्ण बताया है, क्योंकि महिलाएँ द्वारा मातृत्व के पूर्व व पश्चात् शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर ही एक स्वस्थ सन्तान को जन्म दे पाया संभव है। महिलाओं पर परिवार के सभी सदस्यों के देखभाल करने की जिम्मेदारी भी होती है अतः महिलाओं को अधिक शारीरिक श्रम करना पड़ता है। महिलाओं के पास अपने नीजि जीवन स्वयं के लिए समय कि कमी बनी रहती है जिस कारण महिलाएँ अपनी शारीरिक समस्याओं पर ध्यान नहीं दे पाती हैं और समस्या बढ़ती जाती है।

सुनीलकुमार एम कमलापुर और सोमनाथ रेड्डी ने शोधपत्र, "वुमैन हेल्थ इन इंडिया : एन ऐनालाइसिस (2013)", में स्पष्ट कहा है कि भारत में महिलाओं के स्वास्थ्य पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता है। अधिकांश भारतीय परिवारों में लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है उन्हें परिवार के लड़कों की अपेक्षा कम सुविधाएँ प्रदान कि जाती है तो परिवार पर एक आर्थिक बोझ समझा जाता है।

राजेन्द्र प्रताप गुप्ता ने अपनी पुस्तक, "हेल्थ केयर रिफॉर्म इन इंडिया मेकिंग अप फोर दा लोस्ट

डिकेड (2016)", में कहा है कि भारत में नगरो की अपेक्षा गांवों में रहने वाली महिलाओं के स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी ज्यादा है। भारत में महिलाएँ स्तन रोग, ऐनिमिया और मधुमेह रोग से ज्यादा सख्या में पीड़ित हैं। महिलाओं में यह रोग तेजी से फैल रहे हैं, जल्द की कुछ न किया गया तो भारत में इन रोग से पीड़ित महिलाओं की सख्या 2035 तक गम्भीर अवस्था में पहुँच जायेगी।

के. पारकवि, ने अपने शोधपत्र "मीडिया एड वुमैन हेल्थ इन इंडिया (2016)" में कहा है कि महिलाओं में स्वास्थ्य की जानकारी कम है और कम जानकारी के कारण प्रत्येक वर्ष बड़ी सख्या में महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। भारतीय मीडिया महिलाओं को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने में सहयोग दे सकता है किन्तु भारतीय मीडिया द्वारा महिला किसी उपयोगी वस्तु की तरह प्रस्तुत किया जाता है जिसका नाकारात्मक प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। जिस कारण महिलाओं को लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ रही है।

डा0 आर,हरिहरन, द्वारा लिखित शोधपत्र, "हेल्थ स्टेटस आफ वूमैन इन इंडिया : एन ओवरविव आफ लिटरेचर (2016)", में स्पष्ट कहा है के भारतीय समाज में जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारको का प्रभाव महिलाओं के स्वास्थ्य पर पड़ता है। जिन्हें तोड़ पाना महिलाओं के लिए संभव नहीं हो पाता। समाज के फैली रूढ़िवादी सोच से महिलाएँ बाहर नहीं आ पाती और परिणामस्वरूप महिलाओं को स्वास्थ्य की हानि उठानी पड़ती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. पौड़ी व हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधा का आंकलन करना।
2. पौड़ी व हरिद्वार में महिलाओं की स्वास्थ्य सुविधाओं में कमियों का आंकलन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोधपत्र में द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है तथ्यों का विश्लेषण अध्ययन किया गया है अध्ययन के लिए आवश्यकता के अनुसार सरकारी रिपोर्ट व आकड़ों का प्रयोग शोधछात्रा द्वारा किया गया है।

तालिका-1 में पौड़ी व हरिद्वार दोनो जनपद जनसख्या का विवरण दिया गया है जिसका अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड राज्य में हरिद्वार जनपद सर्वाधिक जनसख्या निवास करती है हरिद्वार जनपद देहरादून जनपद के बाद दूसरे सबसे अधिक जनसख्या वाले जनपद में आता है। जनसख्या की दृष्टि से पौड़ी कोटद्वार जनपद के बाद पूरे राज्य में दूसरे सबसे कम जनसख्या वाले जनपद में आता है।⁷ पौड़ी जनपद में बीते गत दशक में जनसख्या दर में कमी आयी है वर्ष 2001-2011 में पौड़ी में जनसख्या घनत्व घटकर 131 से 129 हो गया है। हरिद्वार व देहरादून जनपद को छोड़कर राज्य के शेष 11 जनपदों में जनसख्या वृद्धि में कमी आयी है।⁸

तालिका -1 पौड़ी व हरिद्वार जनपद एक दृष्टि में

क्र.स.	क्षेत्रफल वर्ग किमी	पौड़ी		हरिद्वार	
		2369		5329	
		2011	2001	2011	2001
1	जनसंख्या	687,271	697,078	1,890,422	1447187
	पुरुष	326,829	331,061	1005395	776021
	महिला	360,442	366,017	776021	671166
2	साक्षरता प्रतिशत	82.02	77.49	73.43	63.75
	पुरुष	92.71	90.91	81.04	73.83
	महिला	72.60	65.7	64.79	52.1
3	लिंगानुपात	1103	1106	880	865
4	जनसंख्या वृद्धि दर	-1.41	3.91	30.63	28.70
5	लिंगानुपात 0-6 वर्ष	904	930	877	862
6	घनत्व प्रति वर्ग किमी	129	131	801	613

स्रोत:- उत्तराखण्ड इयर बुक 2016

हरिद्वार ओर पौड़ी दोनो जनपदो मे लिंगानुपात में भारी अन्तर है। पौड़ी जनपद में महिलाओ की संख्या पुरुषो की अपेक्षा अधिक है। पौड़ी जनपद मे महिलाओ की संख्या प्रति हजार पुरुषो पर 1103 है जो कि बीते गत दशक से 3 संख्या कम है। हरिद्वार जनपद मे लिंगानुपात प्रति हजार पर 880 है जो पिछले दशक से 15 संख्या कम है। दोनो जनपदो में लिंगानुपात 223 का अन्तर है। दानो ही जनपदो मे साक्षरता का प्रतिशत मे अन्तर है। हरिद्वार जनपद मे साक्षरता का औसत 73.43 रहा है जबकि पौड़ी जनपद मे साक्षरता का प्रतिशत 82.02 प्रतिशत है जो जनपद हरिद्वार से लगभग 10 प्रतिशत ज्यादा है। पौड़ी जनपद में महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। पौड़ी जनपद में पुरुषों की संख्या 326829, महिलाओं की संख्या 360,442 है महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा 33613 अधिक है। जबकि हरिद्वार जनपद में महिलाओं की संख्या पुरुषों की अपेक्षा कम है हरिद्वार जनपद में महिलाओं की संख्या 776021 पुरुषो की संख्या 1105395 है। महिलाओं की संख्या पुरुषो की अपेक्षा 229,374 कम है। पौड़ी जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आयी है। वर्तमान में पौड़ी जनपद में जनसंख्या -1.41 है जो कि बीते दशक 2001 मे 3.91 रही थी। हरिद्वार जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर तीव्र गति से बढी है वर्तमान में हरिद्वार जनपद में जनसंख्या वृद्धि दर 30.63 है जोकि बीते दशक में 28.70 रही थी। जनपद हरिद्वार में जनसंख्या बहुत अधिक है साथ ही जनसंख्या वृद्धि दर, व घनत्व भी अधिक है हरिद्वार की भौगोलिक स्थिति का प्रभाव व अनुकूल परिस्थितियों के कारण उत्तराखण्ड के बाकी पर्वतीय क्षेत्रों मे बसे जनपदो की अपेक्षा यहाँ पर अधिक संख्या मे लोग निवास करते है। जबकि पौड़ी जनपद के भौगोलिक विषमताओं का प्रभाव के कारण यहाँ पर लोगो पर प्रभाव पडा है जिस कारण यहाँ पर लोग कम संख्या में निवास करते है यहाँ पर

अधिकांश व्यक्ति काम ओर रोजगार के लिए दूसरे राज्यों की ओर लगातार पलायन कर रहे है।

पौड़ी व हरिद्वार जनपद मे उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाएं

उपरोक्त आकड़ो से स्पष्ट होता है कि दोनो जनपदो में जनसंख्या की कमी व अधिकता का प्रभाव वहाँ पर निवास करने वाली महिलाओं को उपलब्ध होने वाली स्वस्थ सुविधाओं पर पडा है। पौड़ी जनपद में महिलाओं की जनसंख्या पुरुषों की अपेक्षा अधिक है। तालिका 2 में पौड़ी व हरिद्वार जनपद मे महिलाओं के लिए उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण दिया गया है, जो निम्नलिखित है-

1. पौड़ी जनपद में कुल 389 डॉक्टर उपलब्ध है। जिसमें की 223 आयुवेदिक, 10 होम्योपैथिक, 149 ऐलोपैथिक डॉक्टर उपलब्ध है। इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 236 डॉक्टर उपलब्ध है जिसमें 103 आयुवेदिक, 13 होम्योपैथिक, 8 यूनानी व 112 ऐलोपैथिक पद्धति से उपचार करने डॉक्टर उपलब्ध है।
2. पौड़ी जनपद में कुल 141 चिकित्सालय व औषधालय है जिनमें से 60 आयुवेदिक, 9 होम्योपैथिक, 149 ऐलोपैथिक पद्धति के चिकित्सालय व औषधालय है। इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 71 चिकित्सालय है जिसमें कि 25 आयुवेदिक, 14 होम्योपैथिक, 4 यूनानी व 28 ऐलोपैथिक प्रकार के चिकित्सालय उपलब्ध है।
3. पौड़ी जनपद में स्थित चिकित्सालयों में आने वाले बिमारी महिलाओं के लिए चिकित्सालय में कुल 1853 बिस्तर उपलब्ध है जिसमें होम्योपैथिक ओर यूनानी चिकित्सालयों मे एक भी बिस्तर उपलब्ध नही है। इसी क्रम में हरिद्वार जनपद में कुल स्थित चिकित्सालयों में आने वाले बिमार महिलाओं के लिए कुल 1843 बिस्तर उपलब्ध है। जिसमें कि आयुवेदिक चिकित्सालयों में 424, होम्योपैथिक में 0, यूनानी में 4 व ऐलोपैथिक में 1415 बिस्तर उपलब्ध है।

तालिका 2— हरिद्वार व पौड़ी जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधायें

	पौड़ी	वर्ष 2016	हरिद्वार	वर्ष 2016
आयुर्वेदिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	60	चिकित्सालय एवं औषधालय	25
	डॉक्टरों की संख्या	223	डॉक्टरों की संख्या	103
	उपलब्ध बेड	219	उपलब्ध बेड	424
होम्योपैथिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	9	चिकित्सालय एवं औषधालय	14
	डॉक्टरों की संख्या	10	डॉक्टरों की संख्या	13
	उपलब्ध बेड	—	उपलब्ध बेड	0
यूनानी				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	—	चिकित्सालय एवं औषधालय	4
	डॉक्टरों की संख्या	—	डॉक्टरों की संख्या	8
	उपलब्ध बेड	—	उपलब्ध बेड	4
ऐलोपैथिक				
	चिकित्सालय एवं औषधालय	72	चिकित्सालय एवं औषधालय	28
	डॉक्टरों की संख्या	149	डॉक्टरों की संख्या	112
	उपलब्ध बेड	1634	उपलब्ध बेड	1415

स्रोत—सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी, हरिद्वार, 2016

- तालिका 3 में पौड़ी व हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं का विवरण दिया गया है जिससे स्पष्ट होता है कि जनपद पौड़ी में 12 सामुदायिक केन्द्र स्थापित हैं इसी प्रकार हरिद्वार जनपद में कुल 8 सामुदायिक केन्द्र स्थापित किये गये हैं।
- पौड़ी जनपद में 49 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र की स्थापना राज्य द्वारा की गई है इसी क्रम में हरिद्वार जनपद में मात्र 13 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र की स्थापना राज्य द्वारा की गई है।
- दोनों जनपदों में स्वास्थ्य सुविधा सम्बन्धी व जानकारी देने वाली संस्थाओं की संख्या में भारी अन्तर है। पौड़ी जनपद में महिला व बच्चों के स्वास्थ्य लाभ के लिए कुल 239 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र हैं तो हरिद्वार जनपद में कुल 165 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र ही उपलब्ध हैं।

तालिका 3— सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, तथा परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र/उपकेन्द्र

क्र.स.	वर्ष 2015-16	पौड़ी जनपद	हरिद्वार जनपद
1	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	12	8
2	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण केन्द्र	49	13
3	परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र	239	165

स्रोत— सांख्यिकी पत्रिका पौड़ी, हरिद्वार, 2016

परिणाम

उपरोक्त सभी आकड़ों व तथ्यों का अवलोकन करने पर यह ज्ञात होता है, कि दोनों जनपद विपरित

भौगोलिक संरचना में स्थित हैं। जिसका प्रभाव यहां पर निवास करने वाली महिलाओं के दैनिक जीवन व स्वास्थ्य सुविधाओं पर निश्चित रूप से पड़ा है पौड़ी जनपद में जनसंख्या हरिद्वार जनपद की अपेक्षा कम है; कम जनसंख्या के लिए स्वस्थ सुविधाएं हरिद्वार जनपद की अपेक्षा तुलनात्मक दृष्टि से संख्या में अधिक हैं। जबकि शहर में स्थित होने के कारण हरिद्वार जनपद में जनसंख्या अधिक ओर महिलाओं की संख्या भी पौड़ी जनपद की अपेक्षा लगभग 2 लाख अधिक है, अधिक जनसंख्या होने के कारण यहां पर सभी को पर्याप्त संख्या में स्वस्थ सुविधाएं प्रदान कर पाना राज्य के लिए एक चुनौतिपूर्ण कार्य है। दोनों जनपदों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम दिखाई देते हैं।

- पौड़ी जनपद में 926 महिलाओं पर 1 डॉक्टर उपलब्ध है। जबकि हरिद्वार में 2388 महिलाओं की जनसंख्या में 1 डॉक्टर उपलब्ध है।
- पौड़ी जनपद में चिकित्सालय की संख्या हरिद्वार जनपद की अपेक्षा अधिक है। पौड़ी में जहां 141 चिकित्सालय उपलब्ध हैं तो हरिद्वार जनपद में इसके आधे मात्र 71 चिकित्सालय हैं।
- पौड़ी जनपद में चिकित्सालयों में 194 महिलाओं पर 1 बिस्तर की सुविधा उपलब्ध है। तो हरिद्वार जनपद में 421 महिलाओं पर 1 बिस्तर की सुविधा उपलब्ध है।
- पौड़ी जनपद में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या 12 है जबकि हरिद्वार जनपद में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या मात्र 8 है।

5. पौड़ी जनपद में महिलाओं के लिए 49 परिवार एवं मातृषिषु कल्याण केन्द्र हैं तो इसकी अपेक्षा हरिद्वार जनपद में पौड़ी जनपद के 1/3 भाग मात्र 13 परिवार एवं मातृषिषु कल्याण केन्द्र की सुविधा उपलब्ध हैं।
6. पौड़ी जनपद में 239 परिवार एवं मातृशिशु कल्याण उपकेन्द्र का संचालन किया जा रहा है तो वही हरिद्वार जनपद में मात्र 165 परिवार एवं मातृषिषु कल्याण उपकेन्द्रों की सुविधा लोगों का उपलब्ध है पौड़ी जनपद में हरिद्वार की अपेक्षा 74 परिवार एवं मातृषिषु कल्याण उपकेन्द्र अधिक हैं।
7. पौड़ी जनपद की अपेक्षा हरिद्वार जनपद की महिलाओं को डाक्टरों की उपलब्धता की कमी का सामना अधिक करना पड़ता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त दोनो जनपदों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं के आंकड़ों का आकलन करने पर स्पष्ट होता है कि दोनों जनपदों में महिलाओं के लिए उपलब्ध सुविधाओं में भारी अन्तर है। पौड़ी जनपद पर्वतीय क्षेत्र में स्थित होने के बावजूद यहां पर महिलाओं के लिए स्वस्थ सुविधाएँ उचित मात्रा में उपलब्ध हैं। हरिद्वार जनपद में उपलब्ध स्वस्थ सुविधाओं की सूची से स्पष्ट होता है कि हरिद्वार जनपद में प्रति डॉक्टर महिलाओं की संख्या पौड़ी जनपद में प्रति डॉक्टर से लगभग तीन गुना अधिक है। साथ ही हरिद्वार जनपद में पौड़ी जनपद की तुलना में उपलब्ध चिकित्सालयों की संख्या भी कम है। जिसके परिणामस्वरूप हरिद्वार जनपद के चिकित्सालयों में उपचार हेतु महिलाओं की संख्या अधिक है। साथ ही महिलाओं को उपचार के लिए डॉक्टरों से मिलने पौड़ी जनपद की अपेक्षा ज्यादा समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। पौड़ी जनपद में महिलाओं को चिकित्सा सुविधा पाने के लिए ज्यादा समय खर्च नहीं करना पड़ता ना ही चिकित्सालयों के ज्यादा चक्कर लगाने पड़ते हैं। क्योंकि पौड़ी जनपद में हरिद्वार जनपद की अपेक्षा अधिक संख्या में चिकित्सक व चिकित्सालय हैं। हरिद्वार जनपद में डॉक्टरों के पास आने वाली महिला मरिजों की संख्या भी अधिक होती है जिस कारण डॉक्टर द्वारा महिलाओं को अधिक समय देना संभव

नहीं है साथ ही डॉक्टर द्वारा अधिक महिलाओं को देख पाना भी संभव नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप महिलाओं को चिकित्सालयों के से अधिक चक्कर लगाने पड़ते हैं। अतः राज्य द्वारा इस गंभीर समस्या पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

सुझाव

उपरोक्त दोनो क्षेत्रों में उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं में अन्तर को कम करने का प्रयास केन्द्र व राज्य सरकार के द्वारा किया जाना चाहिए। दोनों ही क्षेत्रों की अपनी-अपनी विभिन्नताएँ हैं अतः इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है। दोनो ही जनपदों में महिलाओं के लिए चिकित्सा सुविधाओं को और बढ़ाये जाने की आवश्यकता है विशेष रूप से हरिद्वार जनपद में महिलाओं के लिए चिकित्सालय, ओर डॉक्टर की संख्या बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता है। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा हरिद्वार जनपद की महिलाओं के स्वस्थ सुविधा हेतु अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। दानो जनपदों की महिलाओं को उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं में समानता लाने के प्रयास किये जाने चाहिए। किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों की भौगोलिक विषमता भी महिलाओं के जीवन यापन को प्रभावित करती है। जिसके लिए भी शासकीय नियोजन की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0-335
2. नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0-335
3. <http://hindi.indiawater portal.org>
4. सेमवाल गोविन्दा नन्द, उत्तराचल नगर और नगर पालिकाएँ, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0- 333
5. सामाजार्थिक समीक्षा, जनपद हरिद्वार वर्ष 2013-14
6. सेमवाल, गोविन्दा नन्द, उत्तराचल नगर और नगर पालिकाएँ, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0-279
7. सेमवाल गोविन्दा नन्द, उत्तराचल नगर और नगर पालिकाएँ, उत्तराखण्ड प्रकाशन, 2003 पृ0- 333
8. नवानी लोकेश, रावत कल्याण सिंह, उत्तराखण्ड इयर बुक विनसर पब्लिशिंग देहरादून, 2016, पृ0-50